Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध

बीरेंद्र सिंह कुशवाह*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शास. महाविद्यालय, बदरवास, शिवपुरी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोधपत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध के शाश्वत एवं पवित्र रूप को दर्शाता है।गुरु-शिष्य के बीच का सम्बन्ध न केवल एक शैक्षिक प्रक्रिया है, बल्कि यह एक सबंध से ऊपर उठकर सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है। भारतीय संस्कृति कहती है कि मानव जीवन का उद्देश्य आंतरिक और बाहरी अनुभव से विकसित होना है और शिष्यों के मन मस्तिष्क को विकसित करना ही एक गुरु का कर्तव्य भी है और धर्म भी। इस परिवर्तनकारी अनुभव को प्राप्त करने के क्रम में गुरु का एक विशेष स्थान है। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध रिश्ते की दो मुख्य विशेषताओं जैसेशिष्य का समर्पण और गुरु के साथ घनिष्ठता पर निर्भर करता है। ऐसा माना जाता है कि वास्तविक शिक्षण तब होता है जब शिष्य खुद को अनुशासित कर लेता है और गुरु की तरंग दैर्ध्य के अनुरूप हो जाता है।यह शोधपत्र गुरु-शिष्य सम्बन्ध के बहुआयामी लाभों का विश्लेषण करता है। साथ ही इसके ऐतिहासिक विकास, स्वरूप, आदान-प्रदान की विधियाँ, नैतिक एवं आध्यात्मिक आयाम, तथा आधुनिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शब्द कुंजी – गुरु-शिष्य, भारतीय ज्ञान परंपरा, शिष्यागमन।

प्रस्तावना – भारतीय सभ्यता में प्राचीनकाल से ही गुरु-शिष्य सम्बन्ध का विशेष स्थान रहा है। वेदों से लेकर उपनिषदों तथा स्मृतियों एवं भक्ति-पंथ तक गुरु शिष्य की गाथाओं का उल्लेख मिलता है। पारंपरिक रूप से गुरु केवल विद्या प्रदान करने तक ही सिमित नहीं हैबल्कि वह तो जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और व्यवहारिक मार्गदर्शक भी है। मार्गदर्शन में शिक्षण, उदाहरण और प्रभाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुरु-शिष्य संबंध की एक विशिष्ट विशेषता इसकी बहुभिन्नरूपी प्रकृति है। यह इस संबंध की सर्वव्यापी गुणवत्ता को इंगित करता है। भारतीय संगीत जगत में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है, जिसका वर्णन इस दोहे में भली-भांति किया गया हैरू

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म अहम् तस्मै श्री गुरुवे नम:।

इतिहास गवाह है कि परंपराओं ने भारतीय संस्कृति सभ्यता को जीवित रखा है, जिसके कारण शिष्य के विकास में एक निरंतरता देखी गई है। परंपराएँ भारतीय शिक्षण में संतुलन, दृढ़ता और निरंतरता लाती हैं। भारतीय परंपरा को बहुत महत्व दिया गया है, जो एक सर्वविदित सत्य है। भारतीय संस्कृति में विद्यमान गुरु-शिष्य परंपरा, जिसमें ज्ञान, विज्ञान, नैतिकता, संस्कार, और सभ्यता शामिल है। आज भी दीक्षा एक छात्र को अनिवार्य रूप से एक गुरु से ही प्राप्त करनी होती है। शिक्षा, संस्कार, और सामाजिक नियमों का संचार गुरु-शिष्य माध्यम से होता था। कई बार गुरु समाज में विवाद निवारण और नेताओं के रूप में भी कार्य करते थे।यह बहुत ही चिंता का विषय है की प्राचीन ज्ञान हमसे विलीन होता जा रहा है, जो वास्तव में एक बहुत बड़ी क्षति है। फिर भी, ऐसे कई लोग हैं जो पुनर्जन्म लेना चाहते हैं और इस अत्यंत प्रशंसनीय परंपरा के रूपांतरण में शामिल होना चाहते हैं। इसीलिए देश के कई बुद्धिजीवी निरंतर इस गुरु-शिष्य परंपरा की उपयोगिता को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निहा रहे हैं।

इसी परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए, मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा 'भारतीय ज्ञान परंपरा' एक पृथक विभाग का निर्माण किया गया है जो की एक अद्भुत पहल है। इस कदम ने एक ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया है जो गुरुकुल पद्धति को पुनर्जीवित करने में विशेष भूमिका निभाएगा। भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध से जुड़े हुए कुछ मुख्य बिंदु निम्नानुसार हैं: -

1. **दीक्षा और परम्परा –** दीक्षा एक महत्वपूर्ण क्रिया है जो गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान की जाती है जिससे शिष्य आध्यात्मिक-परम्परा से जुड़ता है।
2. **अनुभवात्मक शिक्षा –**गुरु-शिष्य सम्बन्ध में शिक्षण अनुभवात्मक और मौखिक होता है जिसे केवल महसूस या अनुभव किया जाता है।
3. **समर्पण एवं त्याग –** शिष्य का समर्पण एवं त्याग गुरु के प्रति श्रद्धा सम्बन्ध की आधार शीला मना जाता है।
4. **आचार और वाहन –** गुरु के द्वारा न केवल शास्त्रीय ज्ञान पढ़ाया जाता है, बल्कि आचार, नियत, तथा जीवन शैली का भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
5. **नैतिक अनुशासन –** गुरु अनुशासन, संयम और आचार का पालन कराते हैं, जो शिष्य के जीवन का अनिवार्य अंग है।
6. **उद्देश्य –**गुरु के जीवन का एकमात्र उद्देश्य यह है की वह शिष्यों काअज्ञानता से ज्ञान की ओर मार्गदर्शन करे।
7. **भूमिका –** गुरु की भूमिका में शिक्षक, संरक्षक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, और सामाजिक-नायक विद्यमान है।
8. **शैक्षणिक विधियाँ –** भारतीय परम्परा में कई शिक्षण पद्धतियाँ हैं - मौखिक परम्परा (श्रुति), स्मृति (अभ्यास), तर्क-वितर्क (विवरण),

अनुकरण और साधना।

9. **आध्यात्मिक आयाम –** गुरु–शिष्य सम्बन्ध का एक प्रमुख पहलू आध्यात्मिक अनुष्ठान और अनुभव भी है। यहाँ ज्ञान मात्र बौद्धिक नहीं, बल्कि आत्म–परिवर्तन का माध्यम बनता है।

10. **सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका –** गुरु–शिष्य सम्बन्ध, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक धारणाओं को नया आकार प्रदान करता है।

11. **गुरु–शिष्य का आधुनिक सम्बन्ध –** आधुनिक शिक्षा प्रणाली, औपनिवेशिक प्रभाव, और वैश्वीकरण ने पारम्परिक गुरु–शिष्य सम्बन्ध को बदल दिया। डिजिटल माध्यम ने ज्ञान के हस्तांतरण की प्रक्रिया को तात्कालिक बना दिया है, परन्तु गहराई, आध्यात्मिक अनुशासन और व्यक्तिगत मार्गदर्शन की कमी महसूस की जा रही है।

शोध पद्धति– यह शोध साहित्य–आधारित अध्ययन है जिसमे प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के संग्रह हेतु साक्षात्कार, समूह चर्चा, एवं केस स्टडीज का उपयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोत के संग्रह हेतु दैनिक समाचार पत्र,मासिक पत्रिकाएं,शासकीय रिपोर्ट, शिक्षा सम्बंधित नीतियाँ, विद्वत लेख, आदी का उपयोग किया गया है।

चुनौतियाँ:

1. **पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रभाव –**पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने भारतीय समाज, शिक्षा और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में आधुनिकता, वैज्ञानिक सोच, सामाजिक सुधार और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास हुआ, लेकिन यह भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और पारंपरिक शिक्षा पद्धति में बदलाव एवं चुनौतियाँ भी लेकर आई है।

2. **नैतिक मूल्यों में कमी –**समाज में नैतिक मूल्यों में कमी की समस्या लगातार बढ़ रही है, जिसका गुरु–शिष्य परंपरा पर गहरा दुष्प्रभाव पड़ रहा है।नैतिक मूल्यों में कमी के मुख्य कारणशिक्षा और परिवार में संस्कार व नैतिकता पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाना, गुरुओं का नैतिक आदर्श के रूप में कमजोर होना, तथा शिक्षा का व्यावसायीकरण होना है, जिसमें शिष्यों को नैतिक मूल्यों के बजायपरीक्षा परिणाम पर जोर दिया जाना सिखाया जा रहा है।

3. **गुरु–शिष्य सम्बन्ध में विश्वास का ह्रास –**आधुनिक समाज में गुरु–शिष्य सम्बन्ध में विश्वास और आत्मीयता का ह्रास स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके पीछे बदलती शिक्षा प्रणाली, सामाजिक परिवेश और तकनीकी प्रभाव मुख्य कारण हैं।पहले गुरु–शिष्य सम्बन्ध जीवन निर्माण, आचार–विचार, और चरित्र विकास पर आधारित था, जबकि आज यह संबंध औपचारिक और व्यावसायिक होता जा रहा है।

4. **महिला गुरुओं और शिष्यों की मान्यता का अभाव –**भारतीय गुरु–शिष्य परंपरा में महिलाओं को गुरु या शिष्य के रूप में पूर्ण मान्यता ऐतिहासिक रूप से सीमित रही है, जबकि प्राचीन काल में कई महान शिक्षिका, विदूषी एवं उपाध्यायाएँ थीं, जिन्हें समाज में सम्मान प्राप्त था।वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा, वडवा जैसी महिलाएँ न केवल शिक्षिका का ही नहीं बल्किऋग्वेद की रचना में भी योगदान दिया था।

5. **व्यावसायिकता और बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव –**शिक्षा में व्यावसायिकता और बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव शिक्षा की पारंपरिक गरिमा और उद्देश्य को प्रभावित कर रहा है। अब शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति से बढ़कर रोजगार और आर्थिक लाभ पर केंद्रित हो गया है, जिससे शिक्षा का बाजार में वस्तु की तरह लेन–देन होने लगा है।

सुझाव:

1. **पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा पद्धतियों का समन्वय –** पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा पद्धतियों का समन्वय शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। यह दोनों पद्धतियाँ मिलकर शिष्यों को ज्ञान, संस्कार, कौशल और आधुनिकता के साथ–साथ सांस्कृतिक विरासत का संतुलित विकास प्रदान कर सकती हैं।

2. **नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना –** नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना आज की शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इससे शिष्यों के समग्र विकास, चरित्र निर्माण और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना का संवर्द्धन निश्चित रूप से होगा।

3. **गुरु–शिष्य सम्बन्ध में पारदर्शिता और उत्तारदायित्व को बढ़ाना – गुरु–**शिष्य सम्बन्ध में पारदर्शिता और उत्तारदायित्व को बढ़ाना इस पवित्र और प्रभावशाली रिश्ते को मजबूत करने के लिए आवश्यक है। इससे विश्वास, संवाद और सहयोग का स्तर बढ़ता है, जो दोनों गुरु–शिष्य पक्षों के विकास के लिए फायदेमंद साबित होगा।

4. **डिजिटल माध्यमों के माध्यम से सार्थक शिक्षण संबंध स्थापित करना –** डिजिटल माध्यमों के माध्यम से सार्थक शिक्षण संबंध स्थापित करना शिक्षा के आधुनिक दौर की सबसे महत्वपूर्ण जरूरत बन गई है। डिजिटल शिक्षा केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह संवादऔर सहयोग के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करती है जिससे गुरु–शिष्य के बीच गहरा और प्रभावी संबंध बनता है।

निष्कर्ष – पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने भारत को वैज्ञानिक, तार्किक एवं वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने में मदद की, किंतु इससे पारंपरिक शिक्षा एवं संस्कृति का ह्रास भी हुआ है। आज आवश्यकता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राचीन सभ्यता, आधुनिकता और भारतीय मूल्यों में संतुलन स्थापित किया जाए। भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से हम शिक्षा सुधार या सामाजिक विकास में भारतीयता और आधुनिकता के संतुलन की दिशा में सोचने की प्रेरणा पा सकते हैं, विशेषकर जब हम गुरु–शिष्य सम्बन्ध में मूल्यों आधारित शिक्षा या सामाजिक नवाचार को बढ़ावा देना चाहते हैं।नैतिक शिक्षा को शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम और व्यवहार में शामिल करना बहुत ही आवश्यक है।गुरु को को स्वयं नैतिक आदर्श स्थापित करने चाहिए साथ ही भौतिक सफलता के लिए नैतिक मूल्यों, चरित्र, सहयोग, सहिष्णुता और सामुदायिक भावना के विकास पर बल दिया जाना चाहिए। आज के समय की बात की जाये तो समाज में नैतिक मूल्यों की कमी को केवल शिक्षा या कानून से नहीं, बल्कि परिवार, समाज व सांस्कृतिक वातावरण के समावेशित एवं संघटित प्रयासों से ही दूर किया जा सकता है।

अब कुछ महिला गुरु शिक्षा के क्षेत्र में नई पीढ़ी के लिए आदर्श बन रही हैं, लेकिन यह संख्या पर्याप्त नहीं मानी जाती।महिलाओं की भागीदारी, समानता, और लिंग–सशक्तिकरण पर सामाजिक जागरुकता तथा नीति निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता है।इसलिए, महिलाओं को गुरु और शिष्य दोनों रूपों में समाज द्वारा बराबरी की मान्यता दिलाने के लिए शिक्षा, सामाजिक सोच और नीति–निर्धारण में व्यापक सुधार करना हम सब की

जिमेदारी तथ मौलिक कर्तव्य भी जरूरी हैंजिससे गुरु–शिष्य संबंधों में समता व विविधता का विकास हो सके।

मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा चलाया जा रहा भारतीय ज्ञान परंपरा अभियान, जिसमें गुरू शिष्यों के बीच संवाद और अनुशासन पर जोर दिया जा रहा है।यह अभियान पूर्ण रूप से शिक्षा संस्कार, नैतिक मूल्यों, ध्यान, स्मृति, और अनुभव आधारित शिक्षा पर केंद्रितहै।संदभर्रू

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. एंडी होम्स(2024) 'प्रभावी गुरु–शिष्य संबंध बनानारू सफलता के लिए सुझाव'।
2. सोनमाटी टुडे (2022)'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरु–शिष्य–परंपरा की विरासत'।
3. केशव पाटिल (2019) 'एक महान गुरु–शिष्य संबंध कैसे स्थापित करें?'।
4. दृष्टि आईएएस ब्लॉग (2018) 'संचार और शिक्षा: तकनीक ने कैसे बदली शिक्षण पद्धति'।
5. 'भारत में डिजिटल शिक्षा: उद्देश्य, सरकारी पहल, महत्व, लाभ यूपीएससी नोट्स'।
6. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'।
7. यूनिसेफ'सभी के लिए शिक्षा वैश्विक निगरानी रिपोर्ट'।
8. सोहा असलम (2024)'अपने गुरु के साथ साझेदारी संबंध बनाने के सुझाव'।
9. सेन, अमर्त्य 'विकास और स्वतंत्रता'।
10. एलिजाबेथ पेरी (2021)'गुरु–शिष्य के साथी होते हैं बेहद शक्तिशाली, जानिए क्यों'।
11. https://anantaajournal.com/archives/2023/vol9issue6/PartA/9-4-58-306.pdf
12. https://ijcrt.org/papers/IJCRT1133044.pdf
13. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%97%E0%A5%
14. https://sambhashan.com/gurukul-tradition/
15. https://yssofindia.org/hi/about/guru-disciple-relationship
16. https://highereducation.mp.gov.in/
17. https://www.bhartiyadharohar.com/guru-shishya-parampara/
18. https://highereducation.mp.gov.in/?page=vkYEicQe7ExEsQti0wq98Q%3
19. https://highereducation.mp.gov.in/?page=KlNncoJNd42nSvV%2FY%2BNuFg
20. https://www.bhartiyadharohar.com/guru-shishya-parampara
21. https://www.researchgate.net/publication/bharatiya_parampara_me_guru_ki_sankalpana
22. https://www.doubtnut.com/qna/648297897

****